INDIAN SCHOOL AL WADI AL KABIR

Class: X	Department: Hindi	Date of submission: NA
Question Bank: 10	**Topic: सपनों के-से दिन**	Note: Pl. file in portfolio

प्रश्न 1. कोई भी भाषा आपसी व्यवहार में बाधा नहीं बनती पाठ के किस अंश से यह सिद्ध होता है?

उत्तरः कोई भी भाषा आपसी व्यवहार में बाधा नहीं बनती। यह बात पाठ के इस अंश से सिद्ध होती है 'हमारे आधे से अधिक साथी राजस्थान या हरियाणा से आकर मंडी में व्यापार या दुकानदारी करने आए परिवारों से थे। जब बहुत छोटे थे तो उनकी बोली कम समझ पाते। उनके कुछ शब्द सुनकर हमें हँसी आने लगती। परंतु खेलते तो सभी एक-दूसरे की बात खूब अच्छी तरह समझ लेते।'

प्रश्न 2. पीटी साहब की 'शाबाश' फौज के तमगों-सी क्यों लगती थी? स्पष्ट कीजिए।

उत्तरः पीटी मास्टर प्रीतमचंद की पिटाई के डर से सभी बच्चे प्रार्थना में सीधे कतारों में खड़े रहते थे। उन्हें स्कूल स्काउटिंग का अभ्यास करते समय अच्छा लगता । पीटी मास्टर अभ्यास करवाते समय नीली-पीली झंडियाँ बच्चों के हाथों में दे देते थे । जब कभी अभ्यास करते पीटी साहब के मुँह से 'शाबाश' का शब्द सुनने को मिल जाता तो उस समय लगता जैसे- फ़ौज में मिलने वाले सारे तमगे उन्हें मिल गए हों ।

प्रश्न 3. नयी श्रेणी में जाने और नयी कॉपियों और पुरानी किताबों में आती विशेष गंध से लेखक का बालमन क्यों उदास हो उठता था ?

उत्तर: लेखक को कभी भी नई कक्षा में आने पर कोई खुशी अनुभव नहीं होती थी। उन्हें किताबों और कॉपियों में से अजीब-सी गंध आती थी जिससे उसका मन उदास हो जाता था इसका कारण उन्हें आज भी समझ में नहीं आता। इसके पीछे मनोवैज्ञानिक कारण हो सकते थे। जैसे आगे की पढ़ाई का कठिन होना और नए मास्टरों से मार का भय मन के अंदर गहरी जड़ें जमा चुका था। इसीलिए लेखक को नई कक्षा में आने का कोई उत्साह नहीं होता था।

प्रश्न 4. स्काउट परेड करते समय लेखक अपने को महत्त्वपूर्ण 'आदमी' फौजी जवान क्यों समझने लगता था?

उत्तर: स्काउट परेड करते समय लेखक धोबी की धुली वर्दी और पॉलिश किए बूट और जुराबों को पहनकर स्वयं को फौजी जवान ही समझता था। लेखक जब राइट टर्न, लेफ्ट टर्न या अबाउट टर्न कहने पर बूटों की एड़ियों को दाएँ-बाएँ मोड़कर ठक-ठक करके अकड़कर चलता तब उसे ऐसा लगता था कि वह विद्यार्थी नहीं, बहुत महत्त्वपूर्ण आदमी फौजी जवान है। यह सब वर्दी और परेड का कमाल था।

प्रश्न 5. हेडमास्टर शर्मा जी ने पीटी साहब को क्यों मुअत्तल कर दिया?

उत्तरः मास्टर प्रीतमचंद चौथी कक्षा के बच्चों को फारसी पढ़ाते थे। एक दिन उन्होंने सभी बच्चों को शब्द रूप याद करने के लिए कहा। अगले दिन उन्होंने सब बच्चों से शब्द रूप सुने परंतु किसी भी बच्चे को पूरी तरह शब्द रूप याद नहीं थे। सभी बच्चों को मास्टर जी ने सजा दी। जब लेखक की बारी आई उसी समय हेडमास्टर शर्मा जी वहाँ से निकले। चौथी कक्षा के बच्चों से इतना बुरा व्यवहार देखा तो उनसे सहन नहीं हुआ। उन्होंने उनकी शिकायत डायरेक्टर को लिखकर भेज दी मुअत्तल कर दिया ।

प्रश्न 6. लेखक के अनुसार उन्हें स्कूल खुशी से भागे जाने की जगह न लगने पर भी कब और क्यों उन्हें स्कूल जाना अच्छा लगने लगा?

उत्तरः लेखक और उसके साथियों को स्कूल जाना अच्छा नहीं लगता था। माँ-बाप भी उनके साथ जबरदस्ती नहीं करते थे। वे भी बच्चों को अपने साथ काम में लगा लेते थे। थोड़ा-सा बड़ा होने पर बच्चों को बहीखाते का हिसाब-किताब सिखा देना आवश्यक समझते थे। स्काउटिंग का अभ्यास करते समय जब वे नीली पीली झंडियाँ लेकर पीटी साहब की सीटी पर वन-टू-थ्री कहने पर झंडियाँ ऊपर-नीचे या दाएँ-बाएँ करते थे तो उन्हें बहुत अच्छा लगता था। खाकी वर्दी और गले में दो रंगा रुमाल लटकाना भी उन्हें अच्छा लगता था। विशेष रूप से जब पीटी मास्टर उन्हें शाबाशी देते थे तो उन्हें स्कूल बहुत अच्छा लगने लगता था।

प्रश्न 7. लेखक अपने छात्र जीवन में स्कूल से छुट्टियों में मिले काम को पूरा करने के लिए क्या-क्या योजनाएँ बनाया करता था। और उसे पूरा न कर पाने की स्थिति में किसकी भाँति 'बहादुर' बनने की कल्पना किया करता था ?

अथवा

'सपनों के-से दिन' के आधार पर बताइए कि लेखक छात्र जीवन में छुट्टियों का काम पूरा करने के लिए क्या-क्या योजनाएँ बनाता था।

उत्तरः लेखक अपने स्कूली जीवन में छुट्टियों में मिले काम को पूरा करने की बात तब सोचना शुरू करता था जब छुट्टियाँ बीतने लगतीं। सोचते कि हिसाब के दो सौ सवाल निकालने हैं । रोज दस सवाल किए तो बीस दिनों में हो जाएँगे। परन्तु दस दिन और बीत जाते। तब एक दिन में पंद्रह सवाल निपटाने की बात सोचने लगते। कुछ लड़के सोचते कि काम करने के बदले मास्टर जी से पिटना सस्ता सौदा है। लेखक भी ऐसे बहादुरों की तरह सोचने लगता।

प्रश्न 8. पाठ में वर्णित घटनाओं के आधार पर पीटी सर की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

उत्तरः पाठ में वर्णित घटनाओं के आधार पर पीटी सर की चारित्रिक विशेषताएँ इस प्रकार हैं-

(1) **व्यक्तित्वः** उनका कद ठिगना और शरीर दुबला-पतला परंतु गठीला था। उनका चेहरा दागों से भरा था। उनकी आँखें बाज-सी तेज थी। उनके चमड़े के चौड़े पंजों वाले बूट होते थे।
(2) कठोर स्वभावः मास्टर प्रीतम चंद का स्वभाव बहुत कठोर था। मास्टर प्रीतम चंद लड़कों की कतारों के पीछे खड़े-खड़े यह देखते थे कि कौन-सा लड़का कतार में ठीक नहीं खड़ा। यदि कोई लड़का अपना सिर भी इधर-उधर हिला लेता तो वे उसकी ओर बाघ की तरह झपट पड़ते और 'खाल खींचने' के मुहावरे को प्रत्यक्ष करके दिखा देते।

(3) भावना रहितः मास्टर प्रीतम चंद में मानवीय भावनाएँ कम थीं। एक दिन उन्होंने सभी लड़कों को एक शब्द-रूप याद करके लाने को कहा। लड़के रात-भर उसे याद करते रहे, पर पूरा किसी को भी याद नहीं हुआ। दूसरे दिन एक भी लड़का उसे सुना नहीं पाया। इस पर पीटी साहब को गुस्सा आ गया। उन्होंने गुर्राकर सभी लड़कों को कान पकड़ने (मुर्गा बनने) के लिए कहा।
(4) पक्षी प्रेमः मास्टर प्रीतमचंद को बच्चों से प्रेम नहीं था। परंतु उन्हें पक्षियों से प्रेम था। वे बाजार में एक दुकान के ऊपर बने किराए के चौबारे में रहते थे। उन्होंने दो तोते पाले हुए थे। वे अपने तोतों को बादाम खिलाते और उनसे मीठी-मीठी बातें करने में अपना दिन व्यतीत करते थे।
(5) अनुशासन पसंदः मास्टर प्रीतमचंद को अनुशासनहीनता पसंद नहीं थी। स्कूल में प्रार्थना के समय सभी लड़के कतारों में कद के अनुसार सीधे खड़े होते थे। यदि कोई लड़का हिलता हुआ दिखाई दे जाता था तो वे उस लड़के को वहाँ बुरी तरह मारने लगते थे।

प्रश्न 9. विद्यार्थियों को अनुशासन में रखने के लिए पाठ में अपनाई गई युक्तियों और वर्तमान में स्वीकृत मान्यताओं के संबंध में अपने विचार प्रकट कीजिए।
उत्तरः विद्यार्थियों को अनुशासन में रखने के लिए उन्हें भयभीत अवस्था में रखा जाता। स्कूल में विद्यार्थी विशेषकर पीटी मास्टर से बहुत डरते थे। कक्षा में पढ़ाने वाले अध्यापक भी पाठ याद न करके लाने पर पीटते और मुर्गा बनाते थे। सजा का यह ढंग ठीक नहीं माना जा सकता । वर्तमान में बच्चों को शारीरिक दंड नहीं दिया जाता । अध्यापकों को बच्चों के मनोविज्ञान को समझने का प्रशिक्षण दिया जाता है।

इन 10. बचपन की यादें मन को गुदगुदाने वाली होती हैं। विशेषकर स्कूली दिनों की। अपने अब तक के स्कूली जीवन की खट्टी-मीठी यादों को लिखिए।
उत्तरः बचपन की विशेष तौर पर स्कूली जीवन की यादें मन को गुदगुदाती हैं। बचपन की यादें सभी की निजी होती हैं। मेरी भी कुछ ऐसी यादें हैं जो मुझे प्रेरित करती हैं। जब मैं नवीं कक्षा में था तो मैंने अपने सहपाठियों के साथ किसी बात पर मार-पीट की। तब मेरे पापा को विद्यालय में बुलाया गया। पापा ने सारी बातें जानने के पश्चात मुझे शिक्षक एवं सहपाठियों के सामने ही

फटकार लगाई तथा कहा, मार-पीट किसी भी समस्या का हल नहीं है। अगर कोई समस्या है तो अपने शिक्षक से बोलो, मुझे बताओ। हम आपकी सभी समस्याओं को हल करेंगे। मैंने उस दिन से ठान लिया कि मैं अब किसी के साथ मार-पीट नहीं करूँगा तथा आवश्यकता पड़ने पर सबकी हरसंभव मदद करूँगा।

11. प्रायः अभिभावक बच्चों को खेल-कूद में ज्यादा रुचि लेने पर रोकते हैं और समय बरवाद न करने की नसीहत देते हैं। बताइए-

(क) खेल आपके लिए क्यों जरूरी है?

(ख) आप कौन-से ऐसे नियम-कायदों को अपनाएँगे जिससे अभिभावकों को आपके खेल पर आपत्ति न हो?

उत्तरः (क) स्वामी विवेकानंद ने नवयुवकों को कहा था "मेरे नवयुवक मित्रो! बलवान बनो। तुमको मेरी यह सलाह है। गीता के अभ्यास की अपेक्षा फुटबॉल खेलने के द्वारा भी तुम स्वर्ग के अधिक निकट पहुँच जाओगे।" इस कथन से स्पष्ट है कि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का निवास संभव है और शरीर को स्वस्थ तथा मजबूत बनाने के लिए खेल अनिवार्य हैं ।

(ख) अभिभावक चाहते हैं कि बच्चे पढ़ाई करें। उन्हें लगता है कि खेलने से बच्चे पढ़ाई में पिछड़ जाएँगे। अतः मैं अभिभावकों की भावना का ध्यान रखूँगा। मैं अपनी दिनचर्या को इस प्रकार निश्चित करूँगा कि खेलों के कारण मेरी पढ़ाई में बाधा न पड़े। मैं दिनभर खेलते रहने की बजाय खेल और पढ़ाई में संतुलन बिठाऊँगा। इससे अभिभावकों को कोई आपत्ति नहीं होगी ।